INDIAN THINKER ISSN 2320 - 6128
Half yearly Research Journal Vol I Issue IV, Aug. 2014 To Jan. 2015

'चीफ की दावत' मे मानवीय मूल्यो का विघटन

डॉ. बालाजी गायकवाड
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
सिध्दार्थ महाविद्यालय, मुंबई

17

Research Paper - Hindi

'भीष्म साहनी' कथाकार के रुप में हिन्दी साहित्य जगत में सर्व परिचित व्यक्तित्व हैं। एम.ए. पीएच. डी. के पश्चात अध्यापन, पत्रकारिता और रंगमंच से जुडे रहे। 'तमस' उपन्यास पर इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'तमस' पर टी.वी. सिरियल भी बन चुकी थी। कहानी, नाटक और उपन्यास विधाओं में इन्होने श्रेष्ठ रचानाँए की हैं। साहित्य रचना के संदर्भ में भीष्म साहनी लिखते हैं – ''जो रचना मात्र लेखक के मस्तिष्क की उपज हो, वह अकसर अधमरी रचना होती है, भले ही लेखक शिल्प और शब्दों का ताना–बाना बुन रहा हो। लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता। न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो अलग–अलग सत्य होते है। एक ही सत्य होता है और वह जीवन का सत्य होता है। उसी को साहित्य वाणी देता है।''१ भीष्म साहनी की रचनाओं में वर्गभेद, साम्प्रदायिकता, आर्थिक जटिलता, अंतर्विरोध और जीवन के कटु अनुभवों की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने अपनी कहानी में यथार्थवादी चित्रण किया है। भीष्म साहनी अपनी कहानी लेखन की प्रेरणा के संदर्भ में लिखते हैं – ''अपने आस–पास को देखकर कोई ऐसी घटना, मन:स्थिती या विचार मेरे मन को व्यथित करता है और अपने तई में उसे पकाता रहता हूँ पकने के बाद कहानी लिखता हूँ।''२ इनकी प्रमुख कृतियों मेंभाग्यरेखा, पहलापाठ, भटकती राख, पटरियाँ, निशाचर आदि कहानी संग्रह तथा झरोखे, कड़ियाँ, तमस, बसंती आदि उपन्यास और हानूस, कबीरा खड़ा बाजारमें, माधवी आदि नाटक प्रचलित है।

'चीफ की दावत' इनकी श्रेष्ठ कहानियों में से एक है। इसमें आधुनिक भौतिकता में उलझे हुए मध्यवर्गीय मनुष्य की पारिवारीक विडम्बनाओं का चित्रण किया गया है। वर्तमान समय में झूठी–शान–शौकत के चक्कर में मनुष्य अपने माता–पिता को फालतू वस्तु समझने लगा है। वह अपनी सच्चाई को छुपाकर सिर्फ दिखावे का कृत्रिम जीवन जीना चाहता है। प्रस्तुत कहानी में मध्यवर्गीय हृदय की थाह ली गई है। खोखली मर्यादाओं, बाह्याडम्बरों और आरोपित नैतिकता के प्रति भीष्म साहनी ने व्यंग्यपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया है। व्यंग्य के द्वारा कहानी मार्मिक बनी है।

INDIAN THINKER ISSN 2320 - 6128
Half yearly Research Journal Vol I Issue IV, Aug. 2014 To Jan. 2015

'चीफ की दावत' भीष्म साहनी की सर्वश्रेष्ठ कहानी है। इस कहानी में कहानीकार ने आधुनिक भौतिकता में उलझे हुए मध्यवर्गीय मनुष्य की पारिवारिक विडम्बनाओं का चित्रण किया है। वर्तमान में मनुष्य निम्नवर्ग से मध यवर्ग में आया और वह उच्च वर्ग की महत्वाकांक्षा में उसे पारिवारिक रिश्ते की कोई परवाह नहीं है।

कहानी के प्रथमचरण में श्यामनाथ 'चीफ की दावत' के लिए तैयारी में लगे हुए हैं। अपने विदेशी साहब को सुसंस्कृत दिखाने की होड में लगे हुए है। वे दोनों पति–पत्नी घर की सजावट विशेषत: ड्राईंग रुम की सजावट के लिए विशेष चिन्तित हैं। घर में जो फालतू सामान है वह आलमारियों के पीछे और पलंगो के नीचे छिपाया गया। तभी श्यामनाथ के सामने सहसा एक अडचन खड़ी हो गयी, माँ का क्या होगा? पत्नी ने सुझाव दिया कि वह पिछवाडे अपनी सहेली के पास चली जाए। लेकिन श्यामनाथ नहीं चाहता की उस बुढ़ियाँ का फिरसे आना–जाना शुरु हो। बड़ी मुश्किल से उसने उसका आना–जाना बन्द किया था। यहाँ यह स्पष्ट हो जाता है कि श्यामनाथ को बुढ़ों के प्रति सक्त नफरत है। वह माँ को कहाँ बिठाया जाए, कौन से कपड़े पहनेगी, कौन सा जेवर पहनेगी। दूसरे शब्दों में उसकी चिन्ता यह थी कि प्रदर्शन अयोग्य माँ का प्रदर्शन की वस्तु कैसे बनाया जाए। चीफ की नजरों से बचाने के लिए माँ को कहता भी है – ''और माँ, हम लोग पहले बैठक में बैठेंगे। उतनी देर तुम यहाँ बरामदे में बैठना। फिर हम यहाँ आ जाएँ, तो तुम गुसलखाने के रास्तें बैठक में चली जाना।''३ घर में जिस तरह चीजों की सजावट की है उसी तरह माँ को भी बरामदें में कोठरी के बाहर कुर्सी रखते हुए बोले, ''आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो।'' माँ भाला सँभालती, पल्ला ठीक करती उठी, और धीरे से कुर्सी पर आकर बैठ गयी। ''यूँ नहीं, माँ टाँगे उपर चढ़ाकर नहीं बैठते। यह खाट नही है। माँ ने टाँगे नीचे उतारली।''४ शामनाथ ने माँ के लिए कुर्सी की तो व्यवस्था की अब वह माँ को नई सफेद सलवार और कमीज पहनकर बैठने के लिए कहा। श्यामनाथ की शुद्र मानसिकता का परिचय निम्न संवादों से हो जाता हैं।

श्यामनाथ माँ को कहता है, ''चलो, ठीक है। कोई चूडियाँ–बूडियाँ हों, तो वह भी पहनलो। कोई हर्ज नहीं।''

उस पर माँ कहती है, ''चुड़ियाँ कहाँ से लाऊँ बेटा? तुम तो जानते हो, सब जेवर तुम्हारी पढ़ाई में बिक गए।'' यह वाक्य श्यामनाथ को तीर की तरह लगा। तिनककर बोले – ''यह कौनसा राग छोड़ दिया माँ। सीधा कह दो नहीं हैं जेवर, बस! उससे पढ़ाई–बढ़ाई का क्या ताल्लुक है। जो जेवर बिका तो कुछ बनकर ही आया हूँ निरा लण्डूरा तो नहीं लौंट आया। जितना दिया था उससे दुगुना ले लेना।''५ माँ की ममता का मूल्य कभी चुकाया जाता है। लेकिन श्यामनाथ माँ के एहसान को नही मानता, बल्कि उसके वात्सल्य का अपमान भी करता है।

श्यामनाथ की मुख्य चिन्ता यह थी कि माँ को चीफ की नजरों से कैसे दूर रखा जाए और उसे घर के कुडे की तरह कहाँ छिपाया जाए। लेकिन उसी माँ को मिलकर साहब बहुत खुश हुए। उन्होंनें माँ को नमस्ते किया हाथ में हाथ मिलाया। साहब माँ से गाना सुनना चाहते हैं तो श्यामनाथ ने माँ को गाने के लिए कहा माँ ने कभी गाना

गाया भी नही था फिर भी बेटे के लिए गा दिया। साहब और सभी लोग खुश हुए श्यामनाथ की खीज प्रसन्नता और गर्व में बदल उठी थी। माँ ने पार्टी में नया रंग भर दिया था। चीफ के सामने फुलकारी दिखाने का आदेश दे डाला। माँ चुपचाप अन्दर गयी और फुलकारी उठा लायी। 'साहब बडी रुचिसे फुलकारी देखने लगे।' पुरानी फुलकारी थी, जगह–जगह से उसके तागे टूट रहे थे और कपडा फटने लगा था। साहब की रुचिकों देखकर शामनाथ बोले – ''यह फटी हुई है साहब, मैं आपको नयी बनवा दूँगा। माँ बना देंगी। क्यों, माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसन्द है, इन्हें ऐसी ही एक फुलकारी बना दोगी न?''६

माँ चुप रहीं। फिर डरते–डरते धीरे से बोली – ''अब मेरी नजर कहाँ हैं, बेटा! बुढी–आँखें क्या देखेंगी?''७ मगर माँ का वाक्य बीच में ही तोडते हुए श्यामनाथ साहब से बोले, ''वह जरुर बना देंगी। आप उसे देखकर खुश होंगे।'' उपर के संवादों से यह स्पष्ट हो जाता है कि श्यामनाथ को यह महत्वपूर्ण है कि, साहब को फुलकारी पसन्द है। इससे साहब खुश होंगे और उसे तरक्की मिलेगी।

'चीफ की दावत' कहानी का अन्त बड़ा करुण और स्वाभाविक है। दावत के बाद में कहानीकार ने माँ का दयनीय अवस्था का जो चित्र खींचा है, वह बडा करुण तथा मार्मिक है। दावत के बाद माँ अपनी कोठरी में चली गयी। मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल–छल आँसू बहने लगे। वह बार–बार पोंछती, पर वह बार–बार उमड आते जैसे बरसो का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। आधी रात के बाद बेटे ने दरवाजा खटखटाया तो माँ का दिल बैठ गया। अनेक आशंकाओ से भर उठी। क्या बेटे ने अभी तक क्षमा नहीं किया। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि माँ अपनों में अपने ही घर में घुट–घुटकर जी रही थी। इस घुटन भरे वातावरण से मुक्ति पाने के लिए बटे से बोली – ''बेटा तुम मुझे हरिद्वार भेज दो। मैं कब से कह रही हूँ।''

श्यामनाथ माँ को इसलिए नहीं जाने देना चाहता है कि माँ चली जाएगी तो फुलकारी कौन बनायेगा। ''माँ, तुम मुझे धोखा देके यूँ चली जाओगी? मेरा बनता काम बिगाड़ोगी? जानती नहीं, साहब खुश होगा तो मुझे तरक्की मिलेगी।''८ बेटे के दुर्व्यवहार के बाद भी बेटे की तरक्की की आशा मात्र से माँ अपना दु:ख भूल गई।

'चीफ की दावत' भीष्म साहनी की श्रेष्ठ कहानी हैं। कहानी का नायक श्यामनाथ अपने चीफ साहब को अपने घर पर पार्टी देकर अपना प्रमोशन करवाना चाहता है। श्यामनाथ और उसकी पत्नी अपने घर की साफ सफाई में जुटे है झूठी–शान–शौकत के चक्कर में वह अपनी वास्तविकता छुपाना चाहता है। घर में पडे फालतू सामानों को वह अलमारियों और पलंग के नीचे छिपाते हैं। श्यामनाथ को अपनी माँ भी आऊटडेटेड लगने लगती है। तो चिंता में रहता है कि इस माँ का क्या करे? पति–पत्नी के कई तरकीबें सोचने के बाद यह तय हो जाता है कि माँ बरामदें में सफेद कमीज सलवार पहनकर कुर्सीपर बैठी रहे। माँ को यह भी हिदायत दी जाती है कि वह पैर उपर लेकर न बैठे, न सोए, साहब बरामदे की ओर आए तो वह बैठक में चली जाएं।

'चीफ की दावत' के समय के वातावरण का कुशल अंकन है। विदेशी अफसर उनकी पत्नी सब अतिथियों का शराब का दौर चला। उन्हें घर की सजावट बहुत पसंद आयी। ड्रिंक्स के बाद गुसलखाने की और निकल पडे। साहब की नजर माँ पर पड़ जाती है। माँ बहुत डर गयी थी। वह साहब का स्वागत करने के लिए हाथ जोड दिये फिर हाथ में हाथ मिलाया। जहाँ माँ आऊटडेटेड चीज लगने लगती है वहाँ माँ के कारण अपना काम बनता देख शामनाथ खुश हो जाता है। माँ भी बेटे की तरक्की की आशा में अपना दु:ख सब भूल गई।

'चीफ की दावत' यह कहानी यथार्थवादी शिल्प में लिखी गई है। इसमें कई पक्ष को लेखक ने उद्‌घाटित करने का प्रयास किया है। जैसे मध्यवर्गीय व्यक्ति की अरसरवादीता, आधुनिकता, पारिवारीक रिश्तों के प्रति उपेक्षा प्रमुख पात्र शामनाथ के व्यवहारों से प्रकट हुई है। लेखक ने यह कहानी यथार्थवादी शैली में लिखी है। यथार्थवाद के बारे में उन्होंने लिखा है ''किसी घटना का यथावत् चित्रण ही यथार्थ नहीं कहलाता, उसकी तह में काम करनेवाले तत्वों और अन्तर्विरोधों की पकड़ रचना को यथार्थवादी बनानी है।'' प्रस्तुत कहानी में चित्रित शामनाथ और उसकी पत्नी के पीछे किस प्रकार स्वार्थ छिप हुआ है यह लेखक ने बड़ी कुशलता से सुचित किया है। संवादों के जरिये उनकी मन:स्थितीयाँ ध्वनित हो जाती हैं।

उपेक्षित माँ की घुटन उसके संवादों और क्रिया कलापों द्वारा स्पष्ट हो जाती है। कहानी में शहरी व्यक्ति की बोलचाल की भाषा प्रयुक्त हुई है। इस कहानी में आधुनिकता बोध कराने के लिए 'मिस्टर शामनाथ' और मुख्य अतिथिके लिए 'चीफ' शब्द का प्रयोग किया है। कहानी का शीर्षक 'चीफ की दावत' कहानी की मुख्य कथावस्तु उसके मुख्य घटना स्थल और उसकी मुख्य संवेदना के अनुकूल है।

संदर्भ संकेत

१) भीष्म साहनी, अपनी बात, वाणी प्रकाशन, पृ. २७
२) भीष्म साहनी, बातचीत 'पल–प्रतिपल', सं. निर्मोही, पंचकूला, पृ. ७७
३) गद्यपूर्णिमा, सं. सैय्यद रहमतुल्ला, पृ. ११७
४) वही, पृ. ११७
५) वही, पृ. ११८
६) वही, पृ. १२२
७) वही, पृ. १२२
८) वही, पृ. १२४